● **पढ़ो और गाओ :**

९. भारत

जग में सुंदर, विशाल, अनुपम एक अजूबा ।
भारत जैसा देश नहीं है, इस दुनिया में दूजा ।।
सुबह सुनहली किरणें आकर,
खिड़की खोल जगातीं ।
मुँड़ेर पर कोयल-चुनमुन,
राग प्रभाती गातीं ।
कामकाज में जुटा हुआ है, देखो देश समूचा ।
भारत जैसा देश नहीं है, इस दुनिया में दूजा ।।
सच्चे मन से गले लगाकर,
हम हैं प्रेम जताते ।
लेकिन जो भी आँख दिखाता,
उसको सबक सिखाते ।
प्रगति पथ पर बढ़ते, करते श्रम की पूजा ।
भारत जैसा देश नहीं है, इस दुनिया में दूजा ।।

– डॉ. मधुसूदन साहा

पंक्तियों को क्रम से लगाओ और पढ़ो :

१. इस दुनिया में दूजा ।
२. प्रगति पथ पर बढ़ते,
३. करते श्रम की पूजा ।
४. भारत जैसा देश नहीं है,

KBZYH5

❑ उचित हाव-भाव से कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से समूह, गुट एवं एकल रूप में कई बार सस्वर पाठ करवाएँ । उनसे छोटे-छोटे प्रश्न पूछें । लोरी, प्रयाण गीत पढ़ने के लिए प्रेरित करें । अपने देश का महत्त्व समझाएँ और इसकी विशेषताओं पर चर्चा करें ।